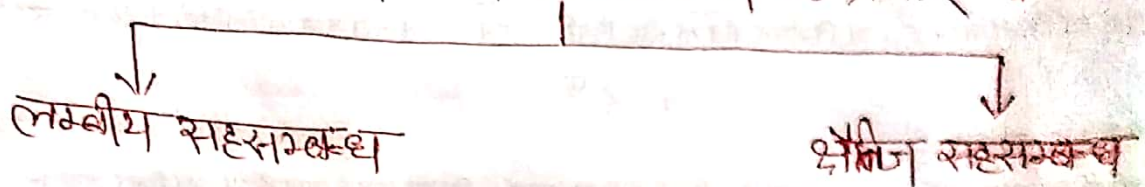


Knowledge Language & Curriculum

Topic :- अन्तर-विषय सहसम्बन्ध

\* अन्तर-विषय सहसम्बन्ध के प्रकार \*



1. लम्बीय सहसम्बन्ध

इस प्रकार के सहसम्बन्ध में किसी विषय के तथ्यों एवं प्रसंगों को बोधगम्य बनाने के लिए उसी विषय के अन्य मिलते-जुलते तथ्यों एवं प्रसंगों के साथ इल्लेव किया जाता है। छात्रों की शिक्षा में गद्य पाठ का शिक्षण करते समय व्याकरण और रचना आदि का सहसम्बन्ध बहुत ही सहजता से स्थापित किया जा सकता है।

2. क्षैतिज सहसम्बन्ध

इस प्रकार के सहसम्बन्ध में एक विषय का दूसरे विषय से सहसम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इसमें एक विषय के ज्ञान का प्रयोग दूसरे विषय को समझने के लिए किया जाता है। इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, और मर्षशास्त्र के शिक्षण में सहसम्बन्ध सुगमता पूर्वक स्थापित किया जा सकता है।

इस प्रकार का सहसम्बन्ध योजनाबद्ध और आकस्मिक दोनों रूपों में हो सकता है।

P.T.O.

अन्तर-विषय सहसम्बन्ध-कैसे  
(Inter-Subject Correlation - How?)

1. भाषा और इतिहास में ।
2. भाषा और भूगोल में ।
3. भाषा और नागरिकशास्त्र में ।
4. भाषा और विज्ञान में ।
5. भाषा और गणित में ।
6. भाषा और कला में ।
7. भाषा और मनोविज्ञान में ।
8. हिन्दी भाषा और विभिन्न विद्याओं में ।  
कविता, गद्य, व्याकरण, नाटक, कहानी, उपन्यास, जीवनी, संस्मरण आदि में ।

\* अन्तर-विषय सहसम्बन्ध के लाभ \*

- ⇒ ज्ञान की अखण्डता तथा शक्ति का स्वरूप करना ।
- ⇒ विषयों का स्पष्ट होना ।
- ⇒ विशिष्टीकरण के दोषों को दूर करना ।
- ⇒ ज्ञान का बालकों के जीवन में स्थायी बना जाना ।
- ⇒ बालकों का सर्वांगीण विकास करना ।
- ⇒ विषयों का गहराई के साथ ज्ञान प्राप्त करना ।
- ⇒ विषयों को रोचक बनाना ।
- ⇒ पाठ्यक्रम के भार को कम करना ।

दिनांक

- ⇒ संपूर्ण पाठ को एक इकाई के रूप में प्रस्तुत करना।
- ⇒ लैंग्वेजिज्ज, ज्ञान प्रदान करना तथा समय की बचत करना।
- ⇒ अनुभवों का संयोजन, तथा शिक्षकों के अनुभवों को लाभकारी शिक्षकों को विषय सबकी अधिकतम ज्ञान प्राप्त करने में साहायता करना।

### \* अन्तर-विषय सहसम्बन्ध की सीमाएँ \*

- ⇒ बड़ी कक्षाओं में प्रयोग नहीं हो सकता।
- ⇒ एक ही विधि का प्रयोग सभी शैक्षणिक परिस्थितियों में नहीं।
- ⇒ सांस्कृतिक विषयों तथा किसी विषय का ज्ञान अध्ययन सम्भव नहीं।
- ⇒ सभी शिक्षक प्रत्येक स्थिति में इतका सफलपूर्वक प्रयोग नहीं कर सकते।

### \* अन्तर-विषय सहसम्बन्ध में सावधानियाँ \*

- ⇒ सहसम्बन्ध स्थापित करते समय शिक्षक को इसके लिए सचेत रहना चाहिए कि पाठ्यवस्तु अप्रामाणिक होकर मूल पाठ से दूर न चली जाए।
- ⇒ हर दृष्टि में सहसम्बन्ध सरल और स्वाभाविक होना चाहिए।
- ⇒ बालकों की कनिष्ठ, मानसिक स्तर और शैक्षणिक स्तर के अनुसूच ही अन्तर-विषय सहसम्बन्ध स्थापित किया जाना चाहिए।
- ⇒ सहसम्बन्ध उन्ही विषयों के साथ किया जाना चाहिए जिनमें रसता, स्पष्टता और बोधात्मकता हो।
- ⇒ अन्तर-विषय सहसम्बन्ध स्थापित करते समय बालकों की क्षमता और स्तृजनात्मकता की प्राप्ति की जानी चाहिए।
- ⇒ पूर्व नियोजित और आकर्षक होने-विषयों से सहसम्बन्ध स्थापित किया जाना चाहिए।
- ⇒ शिक्षक को सहसम्बन्ध विषयों के लिए पहले से पूर्व सचेत होकर तैयारी कर लेनी चाहिए।

Thank you

by  
Mr. Parveen Raj  
Asst. Pro.  
B.R.C. Deoband (U.P.)